विदित
पब्लिकेशन

सत्यमेव जयते

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी

स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी

★

प्रश्न-पत्र-1
सामान्य अध्ययन

विशेष विशेषताएँ

- विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई सामग्री
- परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण
- सरल भाषा और स्पष्टता
- अपडेटेड एवं विश्वसनीय सामग्री

हल किए गए प्रश्न-पत्र
सिद्धांत + बहुविकल्पीय प्रश्न

- पिछले वर्षों के प्रश्न
- विषय-वार प्रश्न
- नवीनतम पैटर्न पर आधारित

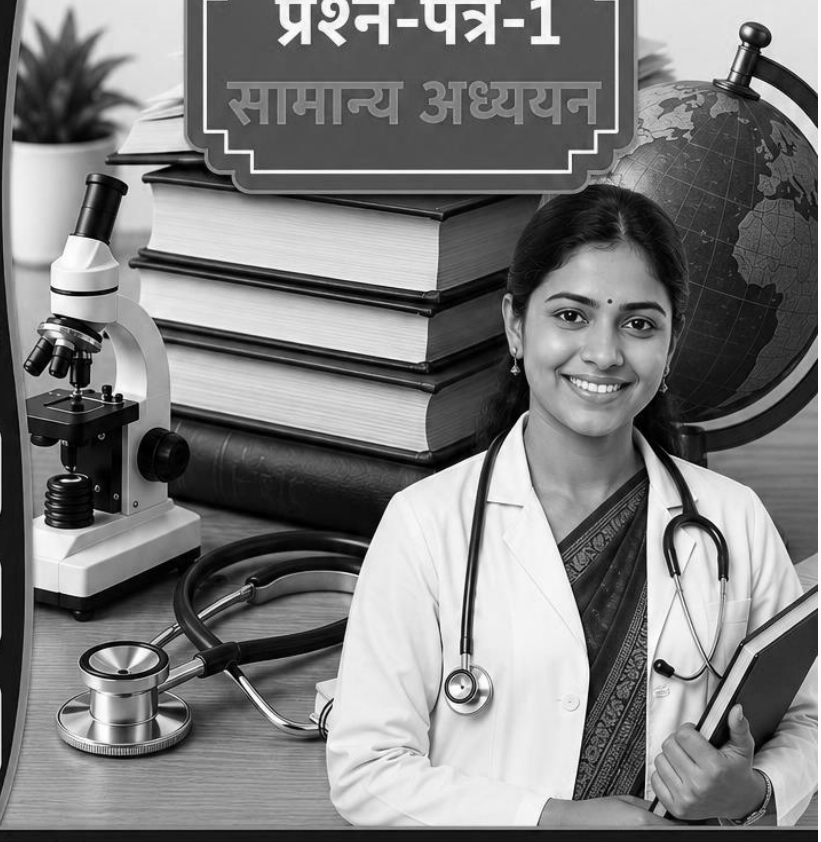

विदित पब्लिकेशन, प्रयागराज, 8858920081

SN	TOPIC	Pages
	1. भारत का इतिहास एवं भारतीय स्वाधीनता संग्राम :-	
1.1	हड़प्पा संस्कृति: सामान्य परिचय	1-14
1.2	मध्यकालीन भारत	15-15
1.3	दिल्ली सल्तनत	16-19
1.4	मुगल साम्राज्य	20-24
1.5	विजयनगर साम्राज्य	25-27
1.6	आधुनिक भारत	28-31
1.7	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	32-38
	2. भारत एवं विश्व का भूगोल :-	
2.1	भारत की सामान्य जानकारी	39-57
2.2	विश्व भूगोल	58-71
	3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं भारतीय संविधान :-	
3.1	संविधान सभा	72-76
3.2	प्रस्तावना	77-77
3.3	मूल अधिकार	78-79
3.4	राज्य के नीति निर्देशक तत्व	80-80
3.5	मूल कर्तव्य	81-81
3.6	भारतीय राजनीतिक प्रणाली	82-83
3.7	संसद	84-86
3.8	राज्य की कार्यपालिका	87-88
3.9	भारत की न्यायिक व्यवस्था	89-93
3.10	स्थानीय स्वशासन	94-95
3.11	उत्तर प्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था	96-96
	4. भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था :-	
4.1	भारतीय समाज के मुद्दे एवं चुनौतियां	97-98
4.2	आर्थिकी के उपागम	99-99
4.3	आजादी के पश्चात भारत में हुए प्रमुख आर्थिक सुधार	100-106
4.4	औद्योगीकरण	107-109

4.5	नगरीकरण	110-110
4.6	विभिन्न वर्गों के लिए नीतियां एवं कल्याणकारी उपाय	111-112
4.7	स्वास्थ्य के आयाम	113-115
4.8	बीमारी एवं स्वच्छता के पहलू	116-120
4.9	मानव पारिस्थितिकी	121-123

5. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व की सम-सामयिक घटनायें:-

5.1	राष्ट्रीय करेंट अफेयर्स	124-126
5.2	अर्थव्यवस्था	127-130
5.3	पर्यावरण	131-138

6. भारतीय कृषि :-

6.1	कृषि	139-147
6.2	एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन	148-149
6.3	कृषि उत्पाद एवं उनके विपणन	150-151

7. सामान्य विज्ञान (कक्षा 10वीं स्तर तक):-

7.1	पोषण	152-163
7.2	परमाणु के मूलभूत कण, समस्थानिक एवं समभारिक	164-167

8. प्रारम्भिक गणित (कक्षा 10वीं स्तर तक):-

8.1	वास्तविक संख्या	168-172
8.2	बहुपद	173-177
8.3	दो चरों में रैखिक समीकरणों का युग्म	178-182
8.4	अंकगणितीय श्रेणी	183-186
8.5	त्रिकोण (त्रिभुज)	187-188
8.6	वृत्तों से संबंधित क्षेत्रफल	189-191
8.7	पृष्ठीय क्षेत्रफल और आयतन	192-195

9. सामुदायिक चिकित्सा :-

9.1	राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन	196-205
9.2	सामुदायिक लामबंदी	206-207

10. स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी परीक्षा — 2005 (SSA) 208-217

पुस्तक के बारे में दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक **'VIDIT Publication' उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)** द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी (HEO) मुख्य परीक्षा के प्रथम प्रश्न-पत्र **'सामान्य अध्यन' (General Studies)** के नवीनतम पाठ्यक्रम और प्रकृति को ध्यान में रखकर तैयार की गयी है। इस पुस्तक में दिए गए सभी विषयों के महत्वपूर्ण तथ्यों और अवधारणाओं का संकलन किया गया है। परीक्षार्थियों की सहायता के लिए इसमें अद्यतन सरकारी आंकड़ों (Public Data) तथा आयोग के मानक स्तर का विशेष ध्यान रखा गया है।

इसे अधिक से अधिक लाभप्रद एवं उपयोगी बनाने के लिए प्रत्येक खण्ड में विस्तृत विषयवस्तु एवं विश्लेषणात्मक जानकारी का समावेश इस प्रकार किया गया है कि अभ्यर्थियों को परीक्षा में कोई कठिनाई न हो। प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित और स्तरीय बनाने में जिन विशेषज्ञों तथा सहकर्मियों का हमें सहयोग मिला, उनके प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं। निरंतर सतर्क प्रयासों के बावजूद पुस्तक में मानवीय भूलवश कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सुधी पाठकों व अभ्यर्थियों के रचनात्मक सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

आदित्य त्रिपाठी

स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी पद हेतु पाठ्यक्रम
स्क्रीनिंग परीक्षा
विषय सामान्य अध्ययन

1. भारत का इतिहास एवं भारतीय स्वाधीनता संग्राम :-

हड़प्पा संस्कृति, वैदिक संस्कृति, जैन एवं बौद्ध धर्म, मौर्य वंश, कुषाण वंश, गुप्त वंश; दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य और भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन।

2. भारत एवं विश्व का भूगोल :-

भारत का भूगोल भारत का भौतिक एवं सांस्कृतिक परिचय, भारत में कृषि, खनिज, विविध संसाधन, परिवहन एवं नगरीकरण, भारत के बंदरगाह, पर्यावरण एवं प्रदूषण, आयात एवं निर्यात, उत्तर प्रदेश की सामान्य भौगोलिक जानकारी।

विश्व का भूगोल भौतिक भूगोल, सौरमंण्डल, स्थलमण्डल, वायुमण्डल, जलमण्डल, जैवमण्डल, मानव एवं आर्थिक भूगोल, पर्यावरण एवं सतत विकास।

3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं भारतीय संविधान :-

भारतीय संविधान, संघीय प्रणाली, भारतीय राजनीतिक प्रणाली, संवैधानिक एवं वैधानिक निकाय, भारत में स्थानीय स्वशासन, उत्तर प्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था।

4. भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था :-

भारतीय समाज के मुद्दे एवं चुनौतियाँ; आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं भूमण्डलीकरण; आर्थिकी के उपागम; आजादी के पश्चात आर्थिक सुधार; विभिन्न वर्गों के लिए नीतियाँ एवं कल्याणकारी उपाय; स्वास्थ्य के आयाम, बीमारी एवं स्वच्छता के पहलू; राज्य एवं स्वास्थ्य देखभाल; मानव पारिस्थितिकी, मानवीय विकास एवं सतत् विकास; पर्यावरण आंदोलन एवं चिंतायें।

5. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व की सम-सामयिक घटनायें:-

खेल-कूद के साथ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनायें।

6. भारतीय कृषि :-

भारत में प्रमुख फसलों की उत्पादन तकनीकी, एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (आई.पी.एम.), कृषि उत्पाद एवं उनके विपणन।

7. सामान्य विज्ञान (कक्षा 10वीं स्तर तक):-

पोषण, पाचन क्रिया, पोषक तत्वों की कमी (विटामिन एवं खनिज), जीवाणुजनित और विषाणुजनित रोग, प्रकाश संश्लेषण, औषधीय पौधे, डी.एन.ए., आर.एन.ए., इकाई, माप, काम, ऊर्जा, पृष्ठ तनाव, श्यानता, मनुष्य की आँख, दर्पण, लेन्स, विद्युत आवेश, प्रतिरोध, चुम्बकीय क्षेत्र, परमाणु के मूलभूत कण, समस्थानिक, समभारिक, तत्व, अणु, धातु, अधातु, अम्ल, क्षार, लवण, साबुन, डिर्टजेन्ट, प्राकृतिक एवं कृत्रिम मधुरक।

8. प्रारम्भिक गणित (कक्षा 10वीं स्तर तक):-

वास्तविक संख्या, अंकगणित के मूलभूत प्रमेय, बहुआयामी पद, दो चरों वाले रैखिक समीकरण युग्म, अंकगणितीय प्रगति, त्रिकोण, वृत्त से सम्बन्धित क्षेत्रफल, सतह क्षेत्र और आयतन।

9. सामुदायिक चिकित्सा :-

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, भारत में राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम, स्वास्थ्य शिक्षा एवं व्यवहार परिवर्तन संचार (बी.सी.सी.), सामूहिक गतिशीलता एवं संसाधन गतिशीलता।

1.1 हड़प्पा संस्कृति: सामान्य परिचय

- हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीनतम और उन्नत शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है, जिसका विस्तार भारत एवं पाकिस्तान दोनों में था।
- वर्ष 1921 में तत्कालीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष जॉन मार्शल के निर्देशन में हड़प्पा स्थल की जानकारी प्राप्त हुई।
- इसका परिपक्व काल लगभग 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक माना जाता है और बाद में इसका पतन हो गया।
- इस सभ्यता का विस्तार पश्चिम में सुत्कागेन-दोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (उप्र) तक तथा उत्तर में मांडा (जम्मू) से दक्षिण में दायमाबाद (महाराष्ट्र)तक फैला हुआ थ।
- यह क्षेत्र त्रिभुजाकार है जिसका क्षेत्रफल लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर था।
- मोहनजोदड़ो सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है तथा राखीगढ़ी भारत में सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- पाकिस्तान में स्थित प्रमुख स्थल- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, सुत्कागेंडोर, चन्हूदड़ों, कोटदीजी
- भारत में स्थित प्रमुख स्थल:

राज्य	संबंधित स्थल
राजस्थान	कालीबंगा
गुजरात	धौलावीरा, लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा, देसलपुर, कुंतासी
हरियाणा	राखीगढ़ी, बनावली, मीताथल, कुणाल
पंजाब	रोपड़, संघोल
उत्तर प्रदेश	आलमगीरपुर
जम्मू-कश्मीर	मांडा

प्रमुख स्थल/खोजकर्ता/नदी/प्राप्त सामग्री

प्रमुख स्थल	खोजकर्ता	नदी	प्राप्त सामग्री
हड़प्पा	दयाराम साहनी	रावी नदी	मुहरें, अन्नागार, शंख से निर्मित बैल 16 भट्टियां
मोहनजोदड़ो	राखलदास बनर्जी	सिंधु नदी	वृहद स्नानागार, कांसे की नृत्य करती लड़की की मूर्ति, सूती कपड़ा, पुजारी राजाओं की मूर्ति, पशुपति मुहर
धौलावीरा	आर. एस. बिष्ट	घग्घर नदी	तीन भागों में विभाजित एकमात्र शहर, जल प्रबंधन प्रणाली, स्टेडियम
कालीबंगा	अमलानंद घोष	घग्घर नदी	अग्निकुंड, जुते हुए खेत के प्रमाण
लोथल	रंगनाथ राव	भोगवा नदी	बंदरगाह , मनके उद्योग
चन्हुदड़ो	एन जी मजूमदार	सिंधु नदी	वक्राकार ईंट, मनका निर्माण,
रोपड़	यज्ञदत्त शर्मा	सतलुज नदी	मानव कंकाल, तांबे की वस्तुएँ
राखीगढ़ी	सूरजभान	घग्घर नदी	हाकरा मृदभांड के भंडार
बनावली	आर एस बिष्ट	रंगोई नदी	मिट्टी से बने हल के साक्ष्य
सुत्कागेंडोर	औरेल स्टाइन	दाश्क नदी	किलेबंदी, व्यापारिक केंद्र

उत्तर प्रदेश के हड़प्पा स्थल

स्थल	जिला	विशेषताएँ / प्राप्त सामग्री
आलमगीरपुर	मेरठ	हड़प्पा सभ्यता का **सबसे पूर्वी स्थल**
हुलास	सहारनपुर	अनाज के दाने, मिट्टी के बर्तन
बड़गांव	सहारनपुर	साधारण मिट्टी के बर्तन
सिंघोल	पश्चिमी यूपी क्षेत्र	ग्रामीण बस्ती के प्रमाण

हड़प्पा सभ्यता महत्वपूर्ण विशेषता

नगर नियोजन प्रणाली

- इसकी सुव्यवस्थित नगर योजना थी, जिसमें चौड़ी सड़कों, पक्की ईंटों से मकानों का निर्माण और उन्नत जल निकासी प्रणाली का उपयोग किया गया था।
- ऊंचाई वाले भाग को नगर-दुर्ग तथा निचले हिस्से को निचला-नगर कहा गया है।
- सड़के एक-दूसरे को समकोण बनाते हुए काटती थी।
- मोहनजोदड़ो का वृहद स्नानागार इस सभ्यता की उन्नत निर्माण कला और स्वच्छता व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण है।

आर्थिक परिदृश्य

- आर्थिक दृष्टि से यह सभ्यता कृषि और व्यापार पर आधारित थी, जिसमें गेहूं, जौ और कपास की खेती की जाती थी।
- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं लोथल से अन्नागार के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- लोथल एवं रंगपुर से चावल की खेती का प्रमाण मिला है।
- सर्वप्रथम कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को दिया जाता है।
- सिंधु सभ्यता के लोगों को बैल, गाय, भैंस, बकरी भेड़ इत्यादि के बारे में जानकारी थी। कूबड़ वाला साँंड़ इस सभ्यता का सबसे प्रिय पशु था।
- लोथल एक बंदरगाह नगर था जिसके माध्यम से मेसोपोटामिया से व्यापार होता था।
- मेलुहा (सिंधु क्षेत्र) के साथ व्यापारिक संबंध की जानकारी मिलती है।
- इसके अतिरिक्त धातु-शिल्प, मनका निर्माण, मिट्टी के बर्तन और मूर्तिकला भी अत्यंत विकसित थी।
- इस सभ्यता के लोगों को कांस्य, सोना तांबा की जानकारी थी तथा लोहा के बारे में कोई प्रमाण नहीं मिलता।
- इस समय दशमलव पद्धति पर आधारित मापतौल प्रणाली प्रचलित थी।
- सिंधु सभ्यता में प्रयोग किए जाने वाले मुहरों का निर्माण सेलखड़ी से किया जाता था।
- मोहनजोदड़ो से सर्वाधिक मात्रा में मुहरें प्राप्त हुई है।

सामाजिक-धार्मिक जीवन

- धार्मिक रूप से लोग मातृदेवी, पशुपति तथा वृक्षों की पूजा करते थे और उनकी लिपि चित्रात्मक थी, जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
- इस समय के लोग धरती को उर्वरता की देवी मानकर उनकी पूजा करते थे।
- सिंधु सभ्यता के लोग यज्ञ से परिचित थे एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- लोथल, बनावली एवं कालीबंगा से अग्निवेदिका का प्रमाण प्राप्त हुआ है।
- सामाजिक जीवन अपेक्षाकृत समानतावादी था और दफनाने की प्रथा से परलोक में विश्वास के संकेत मिलते हैं।
- प्राकृतिक आपदाएँ, नदी मार्ग में परिवर्तन तथा अन्य कारणों के चलते इस महान सभ्यता का पतन हो गया, फिर भी इसकी उन्नत नगर व्यवस्था और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:

- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ "मृतकों का टीला" है।
- तौल की इकाई के रूप में 16 के अनुपात का उपयोग किया जाता था।
- सिंधु सभ्यता की लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी।
- चन्हूदड़ों तथा लोथल में मनके बनाने का कार्य होता था।
- बालाकोट (पाकिस्तान) तथा लोथल सीप उद्योग के लिए जाने जाते थे।
- सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियों के अवशेष की प्राप्ति हुई।

वैदिक संस्कृति

- वैदिक युग को दो भागों में विभाजित किया गया है - ऋग्वैदिक या पूर्व-वैदिक युग (1500-1000 ईसा पूर्व) और उत्तर-वैदिक युग (1000-600 ईसा पूर्व)।
- वैदिक साहित्य को चार भागों संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद में विभाजित किया गया है।
- वेद भारत का सबसे प्राचीन साहित्य है।
- चार वेद हैं- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को वेदत्रयी या त्रयी भी कहा जाता है।

ऋग्वेद

- ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है, भजनों का संग्रह, ऋग्वेद के पुरोहितों को 'होतृ' कहा जाता था।
- 10 मंडल, 1028 सूक्त और 10552 श्लोक (ऋचा)।
- ऋग्वेद के 2 से 7 मंडल सबसे प्राचीन माने जाते हैं।
- गायत्री मंत्र का उल्लेख तीसरे मंडल में किया गया है। इसे विश्वामित्र ने लिखा है। यह भगवान सूर्य एवं सावित्री को समर्पित है।
- नौवां मंडल 'सोम' को समर्पित है।
- शूद्र शब्द का पहली बार उल्लेख 10वें मंडल (सबसे बड़ा) के पुरुष सूक्त (वैदिक समाज शास्त्र) में किया गया है।
- वैदिक काल में गाय को 'अघन्या' माना जाता था। 'अघन्या' का अर्थ है वध के योग्य नहीं।

यजुर्वेद

- इसके अध्ययन करने वाले को 'अध्वर्यु' कहा जाता है।
- इसमें ऋग्वेद के श्लोकों का उपयोग करके विभिन्न अनुष्ठानों और यज्ञों को करने की प्रक्रिया के विवरण के बारे में गद्य में वर्णन किया गया है।
- शतपथ ब्राह्मण एक गद्य ग्रंथ है जिसमें यजुर्वेद से जुड़े वैदिक अनुष्ठानों, इतिहास और पौराणिक कथाओं का वर्णन किया गया है।

सामवेद

- भारतीय संगीत शास्त्र प्राचीनतम पुस्तक है।
- इसके अध्ययन करने वाले को 'उद्गाता' कहा जाता है।

अथर्ववेद

- इसके अध्ययन करता को 'ब्रह्म' कहा जाता है।
- इसमें भारतीय औषधि एवं विज्ञान संबंधी जानकारी शामिल है साथ इसमें रोग तथा उसके निवारण के साधन के रूप में जादू टोना इत्यादि की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई है।
- वेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।

वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथ

वेद	**ब्राह्मण ग्रंथ**
ऋग्वेद	ऐतरेय
सामवेद	पंचविश
यजुर्वेद	शतपथ, तैत्तिरीय
अथर्ववेद	गोपथ

वेद, उपवेद तथा उनके रचनाकार

वेद	**उपवेद**	**उपवेद के रचनाकार**
ऋग्वेद	आयुर्वेद	धन्वंतरि
यजुर्वेद	धनुर्वेद	विश्वामित्र
सामवेद	गंधर्ववेद	भरत मुनि
अथर्ववेद	स्थापत्यवेद	विश्वकर्मा

वैदिक युग में नदियां:

- सिंधु नदी का उल्लेख सबसे अधिक बार किया गया है (इसके महत्व के कारण इसे 'हिरण्यनी' कहा जाता है)।
- सरस्वती नदी सबसे पवित्र नदी थी जिसे 'मातेतमा' (सभी माताओं में सर्वश्रेष्ठ), 'देवितमा' (सभी देवियों में सर्वश्रेष्ठ) और 'नदीतामा' (सभी नदियों में सर्वश्रेष्ठ) के रूप में जाना जाता था।
- ऋग्वेद में यमुना और गंगा नदी का उल्लेख क्रमशः तीन और एक बार किया गया है।

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
अस्किनी	चिनाब
परुष्णी	रावी
विपासा	ब्यास
वितस्ता	झेलम
कुभा	काबुल
सदानीरा	गंडक
शतुद्रि	सतलज
दृषद्वती	घग्घर

धार्मिक स्थिति

- ऋग्वेद में 'इंद्र' को सबसे शक्तिशाली देवता बताया गया है।
- 'इंद्र' को पुरंदर (किलों का विनाशक) कहा जाता है।

ऋग्वैदिक देवता	**विशेषता**
इंद्र	वर्षा का देवता, युद्ध के देवता, समस्त संसार का स्वामी
अग्नि	देवताओं एवं मनुष्यों के बीच मध्यस्थ
वरूण	जलनिधि का प्रतिनिधित्व करते थे
मरूत	आंधी-तूफान के देवता
पूषन	पशुओं के देवता
अरण्यानी	जंगल की देवी
यम	मृत्यु के देवता
अश्विन	चिकित्सा के देवता
सोम	वनस्पति के देवता

वैदिक काल में राजा की सहायता के लिए नियुक्त अधिकारी

अधिकारी	कार्य
पुरोहित	राजा का प्रमुख सलाहकार होता था।
कुलपति	परिवार या कुल का प्रमुख होता था।
सेनानी	सेना का प्रमुख होता था।
विशपति	'विश' (जनसमूह/कबीला) का प्रमुख होता था।
ग्रामणी	गाँव का प्रमुख होता था।
स्पश	गुप्तचर (जासूस) के रूप में कार्य करता था।
पुरप	किले या नगर का रक्षक होता था।

वैदिक युगीन प्रमुख शब्दावली एवं अर्थ

वैदिक युगीन शब्दावली	अर्थ
अघन्या	न मारे जाने योग्य अर्थात गाय
उर्वरा	उपजाऊ भूमि
लांगल	हल
वृक	बैल
यव	जौ
गोधूम	गेहूँ
करीष	गोबर की खाद
तंदुल	धान
व्रीहि	चावल

उपनिषद

- उपनिषद साहित्य कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह सभी समय और सभी के लिए एक दार्शनिक विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।
- उपनिषद 'ज्ञान' के सिद्धांत पर बल देता है।
- इसकी कुल संख्या 108 है तथा इसे वेदांत कहा जाता है।
- मोक्ष शब्द की चर्चा सबसे पहले उपनिषदों में की गई थी।

उपनिषद	शब्द
मुंडकोपनिषद	भारत का राष्ट्रीय वाक्य 'सत्यमेव जयते' से लिया गया है
वृहदारण्यक	"तमसो मा ज्योतिर्गमय" एवं पुनर्जन्म की अवधारणा उपनिषद में मिलती है
कठोपनिषद	मृत्यु के देवता यम और के नचिकेता के बीच बातचीत की कहानी है
जाबालोपनिषद	चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास का वर्णन है।

वेदांग

- वैदिक साहित्य को समझने में वेदांग प्रमुख सहायक होते हैं। इनकी संख्या 6 है।

शिक्षा	शिक्षा - स्वर व्यंजन के उच्चारण का व्याख्या करता है।
कल्प	वैदिक कर्मकांड का प्रतिपादन करने वाला वेदांग
निरुक्त	वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझाना
व्याकरण	इसे वेदों का मुख कहा गया है। इसमें प्रकृति और प्रत्यय के रूप में विभाजन करके पदों की व्युत्पत्ति बताई गई है
छंद	यह वेद मंत्रों के सही उच्चारण के लिए उपयोगी है
ज्योतिष	यह काल का निर्धारण करने वाला वेदांग

प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रवर्तक

दर्शन	प्रवर्तक
सांख्य	कपिल मुनि
योग	पतंजलि
न्याय	गौतम
वैशेषिक	कणाद
मीमांसा	जैमिनी
वेदांत	बादरायण

शैव धर्म के प्रमुख संप्रदाय एवं संस्थापक

शैव धर्म का संप्रदाय	संस्थापक / प्रमुख प्रवर्तक
पाशुपत संप्रदाय	लकुलीश
वीरशैव / लिंगायत संप्रदाय	बसवन्ना
नाथ संप्रदाय	मत्स्येन्द्रनाथ

जैन धर्म

- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्दों से बना है जिसका अर्थ विजेता है।
- जैन धर्म के संस्थापकों को 'तीर्थंकर' कहा जाता है।
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ या आदिनाथ को जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है।
- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी में हुआ था।
- इसके 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी को जैनधर्म वास्तविक प्रवर्तक माना जाता है।

महावीर स्वामी

- इनका जन्म 599 ईसा पूर्व कुंडग्राम (वैशाली के पास) में हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ एक क्षत्रिय शासक थे और माता त्रिशला थीं।
- महावीर का बचपन का नाम वर्धमान था।
- उनकी पत्नी का नाम यशोदा था।
- 30 वर्ष की आयु में उन्होंने सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया और कठोर तपस्या एवं साधना के मार्ग पर चल पड़े।
- लगभग 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के उपरांत वे केवलिन, अर्हत, जिन तथा निर्ग्रंथ कहलाए।
- जामालि महावीर स्वामी के दामाद एवं उनके प्रथम शिष्य भी थे।
- उनकी मृत्यु 527 ईसा पूर्व पावापुरी में हुई, जिसे जैन धर्म में निर्वाण कहा जाता है।

प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह

तीर्थंकर	प्रतीक चिन्ह
ऋषभदेव	वृषभ
अजितनाथ	हाथी
मल्लिनाथ	जल-कलश
संभवनाथ	घोड़ा
शांतिनाथ	हिरण
नेमिनाथ	शंख
सुमतिनाथ	हंस
पार्श्वनाथ	सर्प
महावीर स्वामी	सिंह

जैन दर्शन

- जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है, जिसके लिए व्यक्ति को अपने कर्मों से मुक्त होना पड़ता है।
- इस धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव में आत्मा होती है और अहिंसा का पालन सर्वोपरि कर्तव्य है।
- जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों में त्रिरत्न—सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र—का विशेष महत्व है।
- इसके साथ ही पंच महाव्रत—सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य और —का पालन करना आवश्यक माना गया है।
- अहिंसा जैन धर्म का आधारभूत बिंदु है।
- जैन धर्म में अनंत चतुष्टय है- अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य एवं अनंत सुख।
- जैन दर्शन में अणुव्रत सिद्धांत, अनेकांतवाद (सत्य के अनेक पक्ष) और स्यादवाद (ज्ञान की सापेक्षता) जैसे सिद्धांत भी महत्वपूर्ण हैं, जो सहिष्णुता और व्यापार दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं।
- जैन धर्म में तत्व के तीन कारक है- उत्पत्ति, क्षय और स्थायित्व।
- स्थानकवासी संप्रदाय, यापनीय संप्रदाय, श्वेतांबर एवं दिगंबर संप्रदाय का संबंध जैन धर्म से है।

जैन धर्म की प्रमुख संगीति

संगीति	स्थान	अध्यक्ष	मुख्य कार्य
प्रथम जैन संगीति	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	जैन धर्म के 12 अंगों का संकलन
द्वितीय जैन संगीति	वल्लभी	देवर्धिगणि क्षमाश्रमण	जैन ग्रंथों का लेखन

जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ एवं उनके रचनाकार

ग्रंथ	रचनाकार
कल्पसूत्र	भद्रबाहु
स्यादवादमंजरी	मल्लिसेन
न्यायावतार	सिद्धसेन दिवाकर
प्रवचनसार	कुन्दकुन्द
द्रव्यसंग्रह	नेमिचंद्र
परिशिष्टपर्वन	हेमचंद्र
न्यायदीपिका	धर्मभूषण

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म की स्थापना छठी शताब्दी ईसा पूर्व में **गौतम बुद्ध** द्वारा की गई, जिनका जन्म 563 ईसा पूर्व कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी में हुआ था।
- इनके पिता शुद्धोधन (शाक्यगण) तथा माता माया देवी कोलिय वंश से थी।
- उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। इनका अन्य नाम तथागत एवं शाक्यमुनि भी है।
- इनका विवाह 16 वर्ष की आयु में यशोधरा से हुआ। उनके पुत्र का नाम राहुल था।
- संसार के दुखों को देखकर उन्होंने 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग किया, जिसे 'महाभिनिष्क्रमण' कहा जाता है, और 6 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसके बाद वे बुद्ध कहलाए।
- उन्होंने सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश दिया, जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहा जाता है।

गौतम बुद्ध से संबंधित प्रमुख घटनाएँ:

घटना	स्थान	प्रतीक
जन्म	लुम्बिनी	कमल
गृह त्याग (महाभिनिष्क्रमण)	कपिलवस्तु	घोड़ा (कंथक)
ज्ञान प्राप्ति	बोधगया	बोधि वृक्ष
प्रथम उपदेश (धर्मचक्र प्रवर्तन)	सारनाथ	धर्मचक्र
महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	कुशीनगर	स्तूप

प्रमुख बौद्ध दर्शन

- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न है- बुद्ध, धम्म एवं संघ।
- बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धांत चार आर्य सत्य -दुख, दुख का कारण, दुख का निरोध और दुख निरोध का मार्ग है।
- अष्टांगिक मार्ग-सम्यक दृष्टि, संकल्प, वाक, कर्मांत, आजीव, व्यायाम, स्मृति और समाधि हैं, जिनके पालन से मनुष्य मोक्ष या निर्वाण प्राप्त कर सकता है।
- बौद्ध धर्म में आत्मा और ईश्वर की अवधारणा को विशेष महत्व नहीं दिया गया, बल्कि कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है।
- आगे चलकर बौद्ध धर्म दो प्रमुख शाखाओं—हीनयान और महायान—में विभाजित हो गया, जिनमें महायान में बुद्ध की पूजा और मूर्ति पूजा का अधिक महत्व है।
- बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में **सम्राट अशोक** का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने इसे भारत के बाहर श्रीलंका, चीन, जापान आदि देशों तक फैलाया।
- बौद्ध धर्म की भाषा पालि और प्राकृत रही तथा इसके ग्रंथ त्रिपिटक कहलाते हैं।

बौद्ध ग्रंथ के त्रिपिटक

पिटक	विवरण
विनय पिटक	इसमें बौद्ध संघ के नियम, अनुशासन और भिक्षुओं-भिक्षुणियों के आचार-विचार का वर्णन है
सुत्त पिटक	इसमें गौतम बुद्ध के उपदेश, प्रवचन और धर्म संबंधी शिक्षाएँ संकलित हैं
अभिधम्म पिटक	इसमें बौद्ध दर्शन एवं दार्शनिक विश्लेषण किया गया है

- प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन अजातशत्रु के शासनकाल के दौरान किया गया था।

प्रमुख बौद्ध संगीति

बौद्ध संगीति	अवधि	शासक	स्थान
प्रथम	483 ई.पू.	अजातशत्रु	राजगृह
द्वितीय	383 ई.पू.	कालाशोक	वैशाली
तृतीय	250 ई.पू.	अशोक	पाटलिपुत्र
चतुर्थ	प्रथम शताब्दी	कनिष्क	कुंडलवन (कश्मीर)

प्रमुख बौद्ध ग्रंथ एवं उनके रचनाकार

ग्रंथ	रचनाकार
मिलिंदपन्हो	नागसेन
बुद्धचरित, सौंदरानंद	अश्वघोष
अभिधम्मकोश	वसुबंधु
माध्यमिक सूत्र	नागार्जुन

महाजनपद

- महाजनपद प्राचीन भारत (लगभग 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व) के वे बड़े जन-राज्य थे, जो छोटे-छोटे जनपदों के मिलकर बनने से विकसित हुए।
- बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।
- वैशाली बुद्ध काल का सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य था।
- पुराणों के अनुसार मगध पर शासन करने वाला पहला राजवंश बृहद्रथ वंश था।

महाजनपद	राजधानी
अंग	चंपा
मगध	राजगृह
काशी	वाराणसी
कोसल	श्रावस्ती
वज्जि (वृज्जि)	वैशाली
मल्ल	कुशीनगर / पावा
चेदि	शुक्तिमती
वत्स	कौशांबी
कुरु	इन्द्रप्रस्थ
पांचाल	अहिच्छत्र / कांपिल्य
मत्स्य	विराटनगर
शूरसेन	मथुरा
अश्मक	पोटलि/पोतन
अवंति	उज्जयिनी / महिष्मती
गांधार	तक्षशिला
कम्बोज	राजपुर

मगध राज्य के प्रमुख वंश

वंश	संस्थापक, राजधानी, प्रमुख शासक एवं उपलब्धियाँ
हर्यक वंश	कार्यकाल: 544-412 ई.पू. संस्थापक: बिम्बिसार (महावीर जैन एवं गौतम बुद्ध के समकालीन) राजधानी: राजगृह (बाद में पाटलिपुत्र) प्रमुख शासक: अजातशत्रु, उदयिन उपलब्धियाँ: मगध साम्राज्य का विस्तार, युद्ध में नवीन हथियारों (रथमुषल, महाशिलकंटक) का प्रयोग, नागदशक इस वंश का अंतिम शासक था।
शिशुनाग वंश	कार्यकाल: 412-344 ई.पू. संस्थापक: शिशुनाग राजधानी: वैशाली (बाद में पाटलिपुत्र) प्रमुख शासक: कालाशोक उपलब्धियाँ: द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन नंदीवर्धन इस वंश का अंतिम शासक था।
नंद वंश	कार्यकाल: 344-321 ई.पू. संस्थापक: महापद्मनंद (दूसरे परशुराम का अवतार) राजधानी: पाटलिपुत्र प्रमुख शासक: धनानंद (सिकंदर का समकालीन) उपलब्धियाँ: पूरे उत्तर भारत पर नियंत्रण, शक्तिशाली केंद्रीकृत शासन

मौर्य वंश

- मौर्य वंश प्राचीन भारत का पहला विशाल और केंद्रीकृत साम्राज्य था, जिसकी स्थापना 322 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य ने की।
- इस स्थापना में उनके चाणक्य (कौटिल्य) का महत्वपूर्ण योगदान था।
- मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी और यह उत्तर-पश्चिम से लेकर दक्षिण के बड़े हिस्सों तक फैला हुआ था।

चंद्रगुप्त मौर्य (322–298 ईसा पूर्व):

- चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश को पराजित कर मौर्य साम्राज्य की नींव रखी।
- उनके सत्ता में आने में चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुगुप्त) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यूनानी लेखों में चंद्रगुप्त को 'सैंड्रोकोटस' (Sandrokotus) के नाम से उल्लेखित किया गया है।
- उन्होंने यूनानी शासक सेल्युकस निकेटर को हराकर उत्तर-पश्चिमी सीमाओं को सुरक्षित किया और एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया।
- जीवन के अंतिम समय में चंद्रगुप्त ने जैन धर्म को अपनाया और जैन आचार्य भद्रबाहु के नेतृत्व में कर्नाटक के श्रवणबेलगोला चले गए। वहीं उन्होंने 'सल्लेखना' (उपवास द्वारा शरीर त्याग) की विधि से अपना जीवन समाप्त किया।
- चंद्रगुप्त मौर्य ने सौराष्ट्र के गिरनार क्षेत्र में सुदर्शन झील का निर्माण कराया गया। इस झील का निर्माण उनके राज्यपाल पुष्यगुप्त वैश्य द्वारा कराया गया था।

मेगस्थनीज

- यह एक यूनानी राजदूत था, जिसे सेल्युकस निकेटर ने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था।
- उसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की।
- यह ग्रंथ मौर्यकालीन प्रशासन, समाज और अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

बिंदुसार (297–273 ईसा पूर्व) :

- बिंदुसार, चंद्रगुप्त के पुत्र थे, जिन्होंने साम्राज्य को आगे बढ़ाया और दक्षिण भारत तक उसका विस्तार किया।
- उन्हें 'अमित्रघात', 'भद्रसार' और 'सिंहसेन' जैसे नामों से भी जाना जाता था।
- तक्षशिला में विद्रोह होने पर उन्होंने अपने पुत्रों अशोक और सुषीम को वहाँ भेजा।
- बिंदुसार के दरबार में यूनानी राजदूत डाइमेकस (एंटिओकस I द्वारा भेजे गए) और डायोनिसियस (टॉलेमी II द्वारा भेजे गए) आए थे, जो उस समय के विदेशी संबंधों को दर्शाते हैं।
- उन्होंने अशोक को उज्जैन का गवर्नर नियुक्त किया।
- बिंदुसार 'आजीवक' संप्रदाय के अनुयायी थे, जिसकी स्थापना मक्खलि गोसाल ने की थी, जो गौतम बुद्ध के समकालीन थे।

अशोक (273 – 232 ईसा पूर्व):

- अशोक बिंदुसार और सुभद्रांगी के पुत्र थे। उनका जन्म लगभग 304 ईसा पूर्व में हुआ था।
- उन्हें 'देवानामप्रिय' और 'प्रियदर्शी' जैसे उपनामों से भी जाना जाता था।
- अशोक का वास्तविक (व्यक्तिगत) नाम हमें मास्की, गुर्जरा और नेत्तूर के अभिलेखों में मिलता है।
- वे 268 ईसा पूर्व में सिंहासन पर बैठे। राजा बनने से पहले अशोक उज्जैन के गवर्नर थे।

कलिंग युद्ध 261 ईसा पूर्व में अशोक और कलिंग राज्य के बीच लड़ा गया था। उस समय कलिंग (वर्तमान उड़ीसा) की राजधानी तोशली थी।
इस युद्ध की जानकारी अशोक के 13वें शिलालेख से प्राप्त होती है। इस युद्ध की भयावहता ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने सदैव के लिए युद्ध की नीति का त्याग कर दिया और 'धम्म' अर्थात् शांति, अहिंसा और नैतिकता की नीति को अपनाया। यह युद्ध उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

अशोक के अभिलेख

- अशोक के अभिलेखों को सबसे पहले 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा।
- अधिकांश अभिलेख पाली भाषा तथा कुछ प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।
- अशोक ने भारत के अधिकांश भागों में अपने अभिलेखों के लिए ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया, जबकि उत्तर-पश्चिमी भारत में खरोष्ठी लिपि का उपयोग किया गया।
- अशोक के कुल 14 प्रमुख शिलालेख (Major Rock Edicts) माने जाते हैं।

अशोक के प्रमुख शिलालेख

शिलालेख	विषय
पहला	पशु बलि की निंदा
दूसरा	मनुष्य एवं पशु दोनों की चिकित्सा व्यवस्था
तीसरा	राजकीय अधिकारियों को धम्म एवं नैतिक आदेश
चौथा	धम्म-घोष (धर्म की घोषणा) का प्रचार
पाँचवाँ	धम्म महामात्रों की नियुक्ति
छठा	आत्म नियंत्रण की शिक्षा

सातवाँ	धार्मिक सहिष्णुता का संदेश
आठवाँ	धम्म यात्राओं की शुरुआत
नौवाँ	शिष्टाचार का उल्लेख
दसवाँ	राज्य के अधिकारी प्रजा के हित में सोचें
ग्यारहवाँ	धम्म की व्याख्या की गई है
बारहवाँ	स्त्री महामात्रों की नियुक्ति
तेरहवाँ	कलिंग युद्ध का उल्लेख
चौदहवाँ	अशोक द्वारा जनता को धार्मिक जीवन बिताने की प्रेरणा दी गई

अशोक द्वारा धम्म के प्रचार के लिए भेजे गए प्रचारक एवं क्षेत्र

प्रचारक	**क्षेत्र**
मज्जन्तिक	कश्मीर एवं गांधार
महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
महारक्षित	यवन देश (यूनानी प्रदेश)
मज्जिम	हिमालय क्षेत्र
सोन एवं उत्तर	सुवर्णभूमि
महेंद्र एवं संघमित्रा	श्रीलंका

मौर्य के काल का प्रशासन

- प्रशासन अत्यंत केंद्रीकृत और सुव्यवस्थित था। इसमें सम्राट सर्वोच्च शक्ति का स्रोत होता था और सभी प्रशासनिक, न्यायिक तथा सैन्य निर्णय उसी के नियंत्रण में होते थे।
- राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी।
- प्रशासन को छोटे-छोटे स्तरों में विभाजित किया गया था। सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जिसका प्रमुख अधिकारी ग्रामिक होता था।
- गाँवों के समूह और बड़े क्षेत्रीय प्रशासन के लिए एक उच्च अधिकारी रज्जुक नियुक्त होता था।
- राजस्व व्यवस्था के संचालन के लिए एक प्रमुख अधिकारी समाहर्ता होता था, जो पूरे राज्य में कर संग्रह की निगरानी करता था।
- मौर्य काल की न्याय व्यवस्था (Judicial System) में दो प्रकार के न्यायालय होते थे। पहला धर्मस्थीय न्यायालय था, जो दीवानी मामलों जैसे संपत्ति, विवाद और अनुबंध से संबंधित मामलों की सुनवाई करता था। दूसरा कंटकशोधन न्यायालय था, जो फौजदारी मामलों जैसे अपराध, दंड और कानून-व्यवस्था से संबंधित मामलों का निपटारा करता था।

मौर्य काल के प्रमुख पदाधिकारी

पदाधिकारी	**कार्य**
पण्याध्यक्ष	वाणिज्य और व्यापार का अध्यक्ष
सुराध्यक्ष	मद्य (शराब) उत्पादन और बिक्री का अध्यक्ष
सूनाध्यक्ष	कसाईखानों का अध्यक्ष
गणिकाध्यक्ष	गणिकाओं (वेश्याओं) का का अध्यक्ष
सीताध्यक्ष	कृषि भूमि का अध्यक्ष
आकराध्यक्ष	खानों (खनिज संसाधनों) का अध्यक्ष
लक्षणाध्यक्ष	मुद्रा (सिक्कों) और टकसाल का अध्यक्ष
लोहाध्यक्ष	लौह (लोहे) उत्पादन और उपयोग का अध्यक्ष
नवाध्यक्ष	नौकाओं और जल परिवहन का अध्यक्ष

मौर्य काल की कृषि, राजस्व एवं मुद्रा व्यवस्था

विषय	**विवरण**
सीता	राजा की अपनी भूमि से प्राप्त आय
भूमि कर	कुल उपज का लगभग 1/4 से 1/6 भाग
अदेवमातृक भूमि	ऐसी भूमि जहाँ बिना वर्षा के भी खेती की जाती थी
उदकभाग	सिंचाई कर
अरणी	वर्षा मापने का यंत्र
भाग और बलि	राज्य की प्रमुख राजस्व आय के स्रोत
कार्षापण	चाँदी का सिक्का
काकणी	ताँबे का सिक्का
पण	राज्य की मानक मुद्रा

मौर्यकालीन सैन्य प्रशासन समिति

समिति	कार्य
प्रथम समिति	नौसेना विभाग का संचालन तथा जल-मार्गों की सुरक्षा
द्वितीय समिति	परिवहन एवं रसद विभाग का प्रबंधन
तृतीय समिति	पैदल सेना (पदाति सेना) का प्रबंधन एवं नियंत्रण
चतुर्थ समिति	अश्व सेना (घुड़सवार सेना) का संचालन एवं देखरेख
पंचम समिति	गज सेना (हाथी सेना) का संचालन
षष्ठ समिति	रथ सेना का प्रबंधन

<u>शुंग वंश (185 ई. पू. से 73 ई. पू.):</u>

- शुंग वंश की स्थापना 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग ने की, जो मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ के सेनापति थे।
- उन्होंने बृहद्रथ की हत्या कर सत्ता प्राप्त की और मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद शुंग वंश की नींव रखी।
- इस वंश की राजधानी प्रारंभ में पाटलिपुत्र थी, बाद में विदिशा भी महत्वपूर्ण केंद्र बना। इस काल में ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान हुआ तथा संस्कृत भाषा और वैदिक परंपराओं को बढ़ावा मिला।

पुष्यमित्र शुंग

- पुष्यमित्र शुंग ने 185 ईसा पूर्व में उन्होंने बृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की और पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया।
- उनके शासनकाल में यवन (इंडो-ग्रीक) आक्रमण हुए, जिनमें मेनांडर और डेमेट्रियस प्रमुख थे। शुंग शासकों का एक प्रमुख शत्रु यज्ञसेन था।
- पुष्यमित्र शुंग का शासन लगभग 36 वर्षों तक चला और उनकी मृत्यु 151 ईसा पूर्व में हुई।

अग्निमित्र

- अग्निमित्र, पुष्यमित्र शुंग के पुत्र और शुंग वंश के शासक थे। उनका शासनकाल लगभग 149 ईसा पूर्व से 141 ईसा पूर्व तक माना जाता है।
- अग्निमित्र के बारे में प्रमुख जानकारी संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि कालिदास द्वारा रचित नाटक मालविकाग्निमित्रम् से प्राप्त होती है, जिसमें वे मुख्य पात्र के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

शक शासक

- शक (Shaka) मध्य एशिया से भारत में आए विदेशी शासक थे, जो बोलन दर्रे के माध्यम से भारत में प्रवेश किए और लगभग 500 वर्षों तक विभिन्न क्षेत्रों में शासन करते रहे।
- उनके पाँच प्रमुख शाखाएँ थीं—अफगानिस्तान, तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र और उज्जैन (मालवा)।
- महाराष्ट्र में नहपान एक प्रसिद्ध शक शासक था।

रुद्रदामन प्रथम (130–150 ई.)

- सबसे प्रसिद्ध शक शासक थे, जिन्होंने उज्जैन पर शासन किया और 'महाक्षत्रप' की उपाधि धारण की।
- उनका प्रसिद्ध जूनागढ़ अभिलेख गुजरात के गिरनार पर्वत पर मिला है, जो संस्कृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है।
- रुद्रदामन ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण भी कराया।

कुषाण वंश

- कुषाण वंश की स्थापना पहली शताब्दी ईस्वी में **कुजुल कडफिसेस** द्वारा की गई, जो मध्य एशिया की यूची (Yuezhi) जनजाति से संबंधित थे।
- उत्तर-पश्चिम भारत में आकर उन्होंने अपनी सत्ता स्थापित की।
- इसके बाद **विम कडफिसेस** शासक बना, जिसने सोने के सिक्कों का प्रचलन शुरू किया और भारत-रोम व्यापार को बढ़ावा दिया।

कनिष्क (78–105 ई.):

- कनिष्क कुषाण वंश के महान शासक थे। उन्होंने 78 ईस्वी में सिंहासन प्राप्त किया और 'शक संवत' की शुरुआत की।
- उनकी प्रथम राजधानी पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर) तथा दूसरी राजधानी मथुरा थी।
- उन्हें उनके बौद्ध धर्म के संरक्षण और प्रचार के कारण 'द्वितीय अशोक' भी कहा जाता है।
- कनिष्क ने कश्मीर में 'कनिष्कपुर' तथा तक्षशिला में 'सिरकप' नामक नगर बसाए।
- वे बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के अनुयायी थे। उनके समय में गांधार और मथुरा कला शैलियों का विकास हुआ, जो मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं।
- कनिष्क की मृत्यु लगभग 102 ईस्वी में हुई।
- कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ, जिससे महायान बौद्ध धर्म का विकास और प्रचार-प्रसार हुआ।
- उनके बाद इस वंश का अंतिम शासक वासुदेव था।

कनिष्क के दरबार के विद्वान एवं उनके कार्य

विद्वान	कार्य/योगदान
वसुमित्र	बौद्ध विद्वान, कनिष्क का संरक्षण प्राप्त
अश्वघोष	कनिष्क के दरबारी कवि; 'बुद्धचरित' और 'सौंदरानंद' की रचना
नागार्जुन	प्रसिद्ध दार्शनिक; महायान बौद्ध धर्म के प्रवर्तक विचारक
चरक	कनिष्क के राजवैद्य; 'चरक संहिता' से संबंधित
भरत मुनि	'नाट्यशास्त्र' की रचना
पतंजलि	'महाभाष्य' की रचना
वात्स्यायन	'कामसूत्र' की रचना

गुप्त काल

- गुप्त काल (लगभग 319–550 ई.) की स्थापना श्रीगुप्त ने की, जिन्होंने "महाराज" की उपाधि धारण की थी।
- प्रारंभ में गुप्त शासक कुषाण साम्राज्य के अधीन सामंत थे।
- गुप्त वंश के प्रारंभिक शासकों के बारे में जानकारी प्रयाग प्रशस्ति से मिलती है, जो समुद्रगुप्त के समय की है।
- गुप्त काल को भारत का "स्वर्ण युग" कहा जाता है क्योंकि इस समय कला, साहित्य, विज्ञान और संस्कृति में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

चंद्रगुप्त प्रथम (319–335 ई.)

- चंद्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश के प्रमुख शासक थे और इन्हें वास्तविक संस्थापक माना जाता है। वे घटोत्कच के पुत्र थे।
- उन्होंने लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया, जिससे उन्हें पाटलिपुत्र क्षेत्र पर अधिकार मिला । उन्होंने "महाराजाधिराज" की उपाधि धारण की।
- उनके राज्याभिषेक (319–320 ई.) की स्मृति में गुप्त संवत की शुरुआत हुई।

समुद्रगुप्त (335–380 ई.)

- समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र थे । उनके शासनकाल की विस्तृत जानकारी प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ) से मिलती है, जिसे उनके दरबारी कवि हरिषेण ने संस्कृत में लिखा था।
- इस अभिलेख में उन्हें एक महान योद्धा, विद्वान और कवि के रूप में दर्शाया गया है, जिसके कारण उन्हें "कविराज" की उपाधि दी गई।
- हरिषेण ने 'संधिविग्रहक', 'महादंडनायक' और 'कुमारामात्य' जैसे उच्च पद भी संभाले थे।
- प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त को "लिच्छवि दौहित्र" (लिच्छवि वंश का नाती) भी कहा गया है।
- वे वैष्णव धर्म के अनुयायी थे तथा उनके सिक्कों पर उन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
- इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने उन्हें "भारत का नेपोलियन" कहा है।

समुद्रगुप्त के प्रमुख विजय अभियान

अभियान	विवरण
प्रथम चरण	उत्तर भारत के 9 शासकों को पराजित किया
द्वितीय चरण	पंजाब क्षेत्र पर अधिकार किया
तृतीय चरण	विंध्य क्षेत्र के आटविक (वन) राज्यों को पराजित किया
चतुर्थ चरण	दक्षिण भारत के 12 शासकों को हराया
पंचम चरण	उत्तर-पश्चिम के कुछ विदेशी राज्यों को पराजित किया

चंद्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.)

- चंद्रगुप्त द्वितीय, समुद्रगुप्त के पुत्र थे । उनके बारे में जानकारी देवीचंद्रगुप्तम् (विशाखदत्त द्वारा रचित) से मिलती है।
- उनका विवाह नाग वंश की राजकुमारी कुबेरनागा से हुआ था। उनकी पुत्री प्रभावतीगुप्त का विवाह वाकाटक वंश के रुद्रसेन द्वितीय से हुआ।
- उन्होंने "विक्रमादित्य", "परमभागवत विक्रमांक" और "शकारी" (शक शासकों को हराने के बाद) जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
- उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनाया। उनके सिक्कों पर उनका नाम "चंद्र" भी अंकित मिलता है।
- उदयगिरि गुफा अभिलेख में उनके दिग्विजय (विजयों) का उल्लेख मिलता है।
- उनके दरबार में "नवरत्न" नाम से प्रसिद्ध विद्वानों का समूह था, जिससे उनके काल को गुप्त युग का चरम और "स्वर्ण युग" माना जाता है।
- फाह्यान एक चीनी यात्री थे, जिन्होंने 399–414 ईस्वी के बीच भारत की यात्रा की। वे चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आए थे।

कुमारगुप्त प्रथम (415–455 ई.)

- चंद्रगुप्त द्वितीय के पुत्र और उत्तराधिकारी थे।
- उन्हें 'शक्रादित्य' और 'महेंद्रादित्य' की उपाधियाँ प्राप्त थीं।

- कुमारगुप्त प्रथम के काल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जिसे महायान बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र और "महायान का ऑक्सफोर्ड" कहा जाता है।
- गुप्त शासकों में उनके शासनकाल के सर्वाधिक (लगभग 18) अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
- उनके समय में चाँदी के सिक्कों का प्रचलन भी शुरू हुआ।

स्कंदगुप्त (455–467 ई.)

- गुप्त वंश के अंतिम महान और गौरवशाली शासक माने जाते हैं।
- उन्होंने प्रशासनिक सुविधा के लिए अपनी राजधानी को पाटलिपुत्र से हटाकर अयोध्या स्थानांतरित किया।
- उनके शासनकाल में पहला हूण आक्रमण हुआ, जिसका नेतृत्व खुशनवाज ने किया था। उससे संबंधित जानकारी का उल्लेख जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है।
- इसी अभिलेख में गिरनार के प्रशासक चक्रपालित द्वारा सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण का भी उल्लेख है, जिससे गुप्तकालीन जल प्रबंधन की जानकारी मिलती है।

सुदर्शन झील के निर्माण से संबंधित प्रमुख शासन एवं अधिकारी

शासक	संबंधित अधिकारी / व्यक्ति
चन्द्रगुप्त मौर्य	पुष्यगुप्त
अशोक	तुषास्प
रुद्रदामन प्रथम	सुविशाख
स्कन्दगुप्त	पर्णदत्त तथा चक्रपालित

गुप्त काल की प्रशासनिक व्यवस्था

- गुप्त काल की प्रशासनिक व्यवस्था राजतंत्रीय प्रणाली पर आधारित थी और यह सुव्यवस्थित एवं कुशल थी। इसमें सर्वोच्च अधिकारी स्वयं सम्राट होता था, जो राज्य का अंतिम निर्णयकर्ता था।
- शासक को सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद (Council of Ministers) होती थी। प्रशासनिक कार्यों में **कुमारामात्य** नामक अधिकारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, जिन्हें वेतन के रूप में नकद भुगतान किया जाता था।
- सम्पूर्ण साम्राज्य को **भुक्तियों (Bhuktis)** में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे जिलों (विषय) में बाँटा गया था।
- जिलों के प्रमुख अधिकारी को **विषयपति (Vishayapati)** कहा जाता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव (Village) थी, जिसका प्रमुख अधिकारी **ग्रामिक या महत्तर** होता था।

गुप्त काल की राजस्व व्यवस्था

कर/व्यवस्था	विवरण
भाग	उपज का 1/6 भाग राज्य द्वारा कर के रूप में लिया जाता था
उदकभाग	सिंचाई कर
उड्रंग	स्थायी किसानों पर लगाया जाने वाला भूमि कर
उपरिकर	अस्थायी किसानों पर लगाया जाने वाला भूमि कर
ध्रुवाधिकरण	भूमि राजस्व एकत्र करने वाला विभाग
शौल्किक	सीमा शुल्क/कर वसूलने वाला अधिकारी
विष्टि	जबरन श्रम

गुप्त काल में भूमि के प्रकार

भूमि का प्रकार	विवरण
अग्रहार भूमि	मंदिरों और ब्राह्मणों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि
वास्तु	निवास योग्य (आबादी वाली) भूमि
अप्रहत	जंगली भूमि, जो कृषि योग्य नहीं थी
खिल	अनुपजाऊ या बिना जोती गई भूमि
औदक	दलदली या जलभराव वाली भूमि

गुप्त काल की प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

रचनाकार	प्रमुख रचनाएँ
कालिदास	अभिज्ञान शाकुंतलम्, मेघदूत, ऋतुसंहार, कुमारसंभव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्रम्
विशाखदत्त	मुद्राराक्षस, देविचंद्रगुप्तम
वराहमिहिर	पंचसिद्धांतिका, बृहत्संहिता, बृहत्जातक

विष्णु शर्मा	पंचतंत्र
शूद्रक	मृच्छकटिकम्
आर्यभट्ट	आर्यभटीयम
अमरसिंह	अमरकोश
भारवि	किरातार्जुनीयम

<u>गुप्तोतर काल</u>

पुष्यभूति/वर्द्धन वंश

- पुष्यभूति अथवा वर्धन वंश उत्तर भारत का एक महत्वपूर्ण राजवंश था जिसका उदय लगभग 6वीं शताब्दी ईस्वी में हुआ।
- इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति माना जाता है, हालांकि इसके वास्तविक राजनीतिक उत्थान का श्रेय प्रभाकरवर्धन को दिया जाता है। बाद में इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक हर्षवर्धन हुआ।
- इस वंश की राजधानी थानेश्वर (वर्तमान हरियाणा) थी।

हर्षवर्धन (606 ई. से 647 ई.)

- हर्षवर्धन ने 606 ई. से 647 ई. तक शासन किया। हर्षवर्धन ने थानेश्वर के साथ-साथ कन्नौज को भी अपनी राजधानी बनाया।
- वह एक कुशल प्रशासक था और उसने धर्म, शिक्षा तथा कला को विशेष संरक्षण दिया। वह प्रारंभ में शैव धर्म से जुड़ा था लेकिन बाद में बौद्ध धर्म, विशेषकर महायान संप्रदाय का संरक्षक बन गया।
- उसने प्रयाग में महामोक्ष परिषद तथा कन्नौज में एक विशाल धर्मसभा का आयोजन किया।
- हर्षवर्धन के समय चीन का प्रसिद्ध यात्री ह्वेन त्सांग (Xuanzang) भारत आया, जिसने लगभग 630 से 643 ईस्वी तक भारत में यात्रा की। उसका उद्देश्य बौद्ध धर्म का अध्ययन करना और भारत के बौद्ध स्थलों की जानकारी एकत्र करना था।
- ह्वेन त्सांग ने अपनी प्रसिद्ध कृति "सी-यू-की" (Si-Yu-Ki) में भारत की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति का विस्तृत वर्णन किया है।
- हर्ष स्वयं भी एक विद्वान शासक था तथा उसने "प्रियदर्शिका", "रत्नावली" और "नागानंद" ग्रंथ की रचना की।
- उसके दरबार में प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट रहते थे, जिन्होंने "हर्षचरित" तथा "कादंबरी" नामक ग्रंथ की रचना की।

दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश

राजवंश	स्थापना	संस्थापक	राजधानी	प्रमुख शासक
पल्लव वंश	लगभग 575 ई.	सिंहविष्णु (प्रारंभिक मजबूत शासक)	कांची (कांचीपुरम)	महेन्द्रवर्मन I, नरसिंहवर्मन I, नरसिंहवर्मन II (राजसिंह)
चोल वंश	9वीं शताब्दी	विजयालय चोल	तंजावुर (तंजौर),	राजराज चोल I, राजेन्द्र चोल I, कुलोत्तुंग I
चालुक्य वंश (बादामी)	6वीं शताब्दी	पुलकेशिन I	वातापी (बादामी)	पुलकेशिन II, कीर्तिवर्मन I, विक्रमादित्य I
राष्ट्रकूट वंश	8वीं शताब्दी	दंतिदुर्ग	मान्यखेत	कृष्ण I, अमोघवर्ष I, इंद्र III

प्राचीन भारत से संबंधित प्रमुख महत्वपूर्ण अभिलेख

अभिलेख का नाम	विवरण
हाथीगुम्फा अभिलेख	कलिंग शासक खारवेल का यह अभिलेख ओडिशा के उदयगिरि की हाथीगुम्फा गुफा में उत्कीर्ण है। इसमें खारवेल की विजयों, जनकल्याणकारी कार्यों तथा धार्मिक गतिविधियों का वर्णन मिलता है।
प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख)	समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का वर्णन करने वाला यह अभिलेख उनके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित है। इससे गुप्त साम्राज्य के विस्तार और तत्कालीन राजनीतिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
मेहरौली लौह स्तंभ अभिलेख	दिल्ली स्थित लौह स्तंभ पर अंकित यह अभिलेख चन्द्रगुप्त द्वितीय की विजयों और पराक्रम का वर्णन करता है। यह गुप्तकालीन धातुकर्म की उन्नति का भी प्रमाण है।
जूनागढ़ अभिलेख (रुद्रदामन)	रुद्रदामन प्रथम द्वारा संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण यह अभिलेख सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार तथा उनकी विजयों का विवरण देता है। इसे संस्कृत का प्रथम दीर्घ अभिलेख माना जाता है।
नासिक अभिलेख	सातवाहन शासक गौतमी बलश्री से संबंधित यह अभिलेख महाराष्ट्र की नासिक गुफाओं में प्राप्त हुआ है। इससे व्यापार, प्रशासन तथा दान व्यवस्था की जानकारी मिलती है।
ऐहोल अभिलेख	चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय की उपलब्धियों का वर्णन करने वाला यह अभिलेख उनके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित है। इससे चालुक्य इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
मंदसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोवर्मन से संबंधित यह अभिलेख मालवा क्षेत्र के रेशम बुनकरों की श्रेणी (गिल्ड) तथा गुप्तकालीन आर्थिक और सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालता है।
बेसनगर (हेलियोडोरस) स्तंभ अभिलेख	यूनानी राजदूत हेलियोडोरस द्वारा स्थापित यह स्तंभ वैष्णव धर्म के प्रसार का महत्वपूर्ण प्रमाण है। इसे गरुड़ स्तंभ भी कहा जाता है।

एरण अभिलेख	मध्य प्रदेश के एरण से प्राप्त यह अभिलेख गुप्तकालीन प्रशासन, धार्मिक जीवन तथा हूण आक्रमणों की जानकारी प्रदान करता है।
तालगुंड अभिलेख	कदंब वंश के इतिहास का प्रमुख स्रोत है। इसमें कदंब शासकों की उत्पत्ति, शासन व्यवस्था और उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
ग्वालियर अभिलेख	प्रतिहार शासक मिहिरभोज से संबंधित यह अभिलेख गुर्जर-प्रतिहार वंश के इतिहास और राजनीतिक स्थिति की जानकारी देता है।
भीतरी स्तंभ अभिलेख	स्कन्दगुप्त का यह अभिलेख हूणों पर उनकी विजय तथा गुप्त साम्राज्य की स्थिति का वर्णन करता है।
नानाघाट अभिलेख	सातवाहन वंश के इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें शासकों की वंशावली, यज्ञों तथा राजनीतिक उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।